B12929-R

चन्द्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

CHANDRA SHEKHAR AZAD UNIVERSITY OF AGRICULTURE & TECHNOLOGY, KANPUR

डा० नारमन ई० बोरलाग

को

डी० एससी० की मानद उपाधि के अलंकरण पर

ON THE AWARD OF HONORARY D.Sc. DEGREE TO DR. NORMAN E. BORLAUG

डा. एस.बी. सिंह, कुलपति द्वारा प्रोद्वरण

CITATION BY DR. S.B. SINGH, VICE CHANCELLOR

कुलाधिपति महोदय,

मुझे आपके सम्मुख प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक, अन्तर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ उन्नत केन्द्र, सिमेट मैक्सिको के पूर्व निदेशक तथा नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता डा. नारमन ई० बोरलाग को प्रस्तुत करते हुये अत्यन्त गौरव का अनुभव हो रहा है।

डा. बोरलाग का जन्म 25 मार्च 1914 को इओवा, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्रेस्को के एक छोटे से गाँव में हुआ था। आपने मिनीसोटा विश्वविद्यालय में 1937 में वानिकी में स्नातक डिग्री, 1941 में वानिकी रोग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री तथा 1942 में पादप रोग विज्ञान एवं आनुवांशिकी में विद्या वाचस्पति की डिग्री प्राप्त की। डा. बोरलाग वर्ष 1944 में राकफेलर फाउन्डेशन कोआपरेटिव योजना में मैक्सिको कृषि मंत्रालय के गेहूँ शोध उन्नत कार्यक्रम में अध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुये। वर्ष 1966 में उनके "क्वाइट रिवोलुशन व्हीट इम्प्रूवमेन्ट" कार्यक्रम ने सम्पूर्ण विश्व में रुचि पैदा कर दी। आपके अभिरूचि तथा शोध में हुई उन्नति से उत्साहित होकर राकफेलर व फोर्ड फाउन्डेशन ने मैक्सिको सरकार के सहयोग से एल बतान, मैक्सिको में अन्तर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ उन्नत केन्द्र (सिमेट) की स्थापना की। डा. बोरलाग ने इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था में गेहूँ शोध योजना के निदेशक के रूप में वर्ष 1979 में सेवानिवृत्त होने तक कार्य किया। डा. बोरलाग ने पूर्ण समर्पित भावना से 30 वर्षो से अधिक समय गेहूँ के उत्थान में ही लगाया। ऐतिहासिक **हरित क्रान्ति** को लाने में आपसे ज्यादा किसी अन्य का योगदान नहीं था, जिससे विकासशील देशों के असंख्य लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ। डा. बोरलाग सिद्धान्तों पर ही नहीं, बल्कि कार्य करने में विश्वास करते हैं। एक ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक तथा शोध परिणामों में विश्वास रखने वाले उत्कृष्ट संगठनकर्ता, डा. बोरलाग कई युवा वैज्ञानिकों, जिन्हें सिमेट, मैक्सिको में प्रशिक्षित किया गया, के प्रेरणास्रोत रहे हैं। डा. बोरलाग प्रक्षेत्रों में अपने शिष्यों को शिक्षित करने में विश्वास रखते हैं। आपने व आपके सहयोगियों ने गेहूँ की अधिक उपज देने वाली रोग रोधी तथा अधिक उर्वरकों का उपभोग करने वाली मैक्सीकन बौनी प्रजातियाँ विकसित कीं जिससे पूरे विश्व में उत्पादन में वृद्धि हुई।

डा. बोरलाग गेंहूँ की बौनी मैक्सीकन प्रजातियों को अपनाने की सम्भावनाओं को तलाश करने सन् 1963 से कई बार भारत आये जिसके परिणाम स्वरूप सन् 1968 में भारत में गेंहूँ का उत्पादन तब तक का सर्वाधिक 17 मिलियन टन हुआ, जिसने देश की आर्थिक छवि को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया। उस समय से आप गेहूँ उत्पादन के मौसम में नियमित रुप से भारत आते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप भारत व सिमेट, मैक्सिको

के सद्भावनापूर्ण संबंध आज तक बने हुये हैं और आगे भी सुदृढ़ होते जा रहे हैं। किसानों के महान प्रशंसक डा. बोरलाग ने अपनी भावनाओं को अपनी पुस्तक में निम्न प्रकार से उद्धत किया है:

"यद्यपि कि कृषक अशिक्षित हो सकते हैं, फिर भी उनकी एक पहचान है"

डा. बोरलाग के कार्यों के परिणाम आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक प्रकृति के हैं। भारत के प्रत्येक नागरिक का यह निश्चित विचार है कि कृषि क्षेत्र में हुई हरित क्रान्ति उनकी ही उपलब्धियों का परिणाम है।

संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, पाकिस्तान, नार्वे, कनाडा तथा अन्य देशों की विभिन्न संस्थाओं ने डा. बोरलाग की महान उपलब्धियों का सम्मान किया है। आपने कई परिषदों में कार्य किया व खाद्य उत्पादन में विकासशील देशों को सलाह भी दी। डा. बोरलाग को विश्व शान्ति के लिये वर्ष 1970 में विश्व के सर्वश्रेष्ठ सम्मान नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस सम्मान की सूचना भी उन्हें दूरभाष पर न दी जा सकी क्योंकि वह कार्यालय में थे ही नहीं। सन्देशवाहकों को गेहूँ के खेत में जाना पड़ा जहाँ आप एक तीन पाये के स्टूल पर बैठकर क्रासिंग करने में व्यस्त थे। डा. बोरलाग, इस आयु में भी क्रियाशील हैं, अगणित घंटों तक कार्य करते हैं और विकासशील देशों के असंख्य लोगों की सहायता कर रहे हैं। डा. बोरलाग का जीवन वृत, कठिन कार्य की कहानी है जिसमें कृषकों को अधिक खाद्यान्न पैदा करने के लिये सहायता करते रहना है जिसको विश्व के अधिकांश लोगों की आवश्यकता है।

कुलाधिपति महोदय, अतः, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप नोबेल लारिएट डा. नारमन ई० बोरलाग को डाक्टर आफ साइंस की मानद उपाधि से विभूषित करने की कृपा करें।

राजभवन
लखनऊ
7 मार्च, 2001

(एस0 बी0 सिंह)
कुलपति,
चन्द्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर

Mr. Chancellor, Sir,

I feel honoured to present before you Dr. Norman Ernest Borlaug, an eminent international Scientist, former Director, International Maize & Wheat Improvement Centre (CIMMYT), Mexico and Nobel Laureate.

Dr. Borlaug was born on 25 March, 1914 on a small farm in Cresco, Iowa in the United States. He studied at the University of Minnesota where he earned B.S. in forestry (1937), M.S. in forest pathology (1941) and Ph.D. in plant pathology and genetics (1942). Dr. Borlaug joined the Rockefeller Foundation Cooperative Project in 1944 with the Mexican Ministry of Agriculture as head of the wheat research improvement programme. In 1966 his "Quiet Revolution Wheat Improvement" created world around interest. Encouraged with the progress, the Rockefeller and Ford Foundations in cooperation with Mexican Government, therefore, established the International Maize and Wheat Improvement Centre (CIMMYT) at El Batan, Mexico. Dr. Borlaug served this international organization as Director of wheat research programme and continued on this post until he retired in 1979. Dr. Borlaug devoted all his energies in improvement of wheat for more than 30 years. He contributed more than any other person to achieve the historical **"Green Revolution"**, which improved the living condition of hundreds of millions of people in the developing countries ie non-affluent world. Dr. Borlaug is not only a man of ideals, but essentially a man of action. An eminent scientist and an outstanding organizer in exploiting the results of research, he has always been an inspirer of many young scientists who have been trained at CIMMYT, Mexico. Dr. Borlaug prefers to teach his pupils out in the fields. He and his associates developed New Mexican breeds of wheat, popularly called as dwarf varieties, which were astonishingly high yielding and resistant to diseases besides being responsive to intensive use of fertilizers.

In 1963, Dr. Borlaug explored the possibilities of adoption of Mexican dwarf wheat varieties in India and consequently, India achieved the ever-highest wheat production of 17 million tonnes in 1968. This resulted in the

total transformation of the economic scenario of this country. Since then, he has been a regular visitor to India during the wheat seasons, due to which cordial relations between India and CIMMYT, Mexico have developed which got further strengthened. Dr. Borlaug, a great admirer of the peasant, expressed his sentiments about the farmers in his book as "Although the peasant farmer may be illiterate, he can figure". Dr. Borlaug's contributions are of economic, social, cultural and political nature. Everyone in India is of firm opinion that his great contribution in the field of agriculture has culminated in the form of Green Revolution.

Numerous institutions in the United States, India, Pakistan, Norway, Canada and many other countries have honoured Dr. Borlaug for his great contributions. He served on many boards and advised many governments of the developing world on food production. The highest honour, the Nobel Prize for Peace, was awarded to Dr. Borlaug in 1970. It is significant that when the award was announced, he could not be reached by telephone. Messengers were sent to the wheat field, where he was found seated on a three-legged stool — making wheat crosses. Dr. Borlaug even at this age is still going strong, working uncounted hours and helping millions in the developing countries. The life story of Dr. Borlaug is a story of hard work and determination to help farmers produce abundant food for those most in need of it.

Mr. Chancellor, I, therefore, pray that you may be pleased to confer upon Dr. Norman E. Borlaug - The Founder of Green Revolution in India, the Honorary Degree of Doctor of Science.

RAJ BHAWAN
LUCKNOW
March 07, 2001

(S. B. Singh)
Vice Chancellor
C.S.A. University of Agril. & Tech.,
Kanpur.

Army Printing Press, Lucknow. Ph. : 481164